{Normalization}

(8) सहभागिता में सामान्यीकरण (Normalization in Participation)

समावेशित अधिगम के अन्तर्गत सहभागिता का प्रबन्धन एक मुख्य तत्व है। जब तक छात्र एवं समुदाय की सहभागिता समावेशित अधिगम में प्राप्त नहीं की जा सकती तब तक समावेशित अधिगम की सफलता असम्भव है। इसलिये शिक्षक को उन सभी क्रियाओं एवं उपायों को करना चाहिये जिससे विशेष आवश्यकता वाले छात्र पूर्णत: शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संलग्न हो सके। अत: निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखते हुए समावेशित अधिगम प्रभावी रूप में सम्पन्न करना चाहिये :—

(i) छात्र सहभागिता प्राप्त करने के लिये शिक्षक को सर्वप्रथम छात्रों को अधिक बोलने का अवसर प्रदान करना चाहिये उनकी बातों में से ही उपयोगी विषय को छाँटकर समावेशित अधिगम का आधार बनाना चाहिये।

(ii) छात्र सहभागिता प्रबन्ध के अन्तर्गत विषयों की रूपरेखा तैयार करने से पूर्व छात्रों की योग्यता एवं स्तर पर पूर्ण विचार कर लेना चाहिये जिससे कि छात्रों की विषय के प्रति रुचि बनी रहे।

(iii) सहभागिता प्राप्त करने के लिये छात्रों की सक्रिय भूमिका निश्चित

❖ If money goes before, always doors lie open.

Scanned with CamScanner

करनी चाहिये तथा उनका आवश्यकता के अनुसार सहयोग करना चाहिये। समावेशित अधिगम की क्रिया में नियंत्रण का भी अभाव होना चाहिये जिससे कि छात्र पूर्ण समर्पण भाव से कार्य कर सके।

(iv) सामुदायिक सहयोग प्राप्त करने के लिये भी शिक्षक को समुदाय के व्यक्तियों से सम्पर्क करना चाहिये जिससे कि आवश्यकता के अनुसार समाज के व्यक्तियों के अनुभव का लाभ एवं सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जा सके।

(v) विद्यालय में एवं समुदाय की दूरी को समाप्त करने के लिये सामुदायिक कार्यक्रमों में छात्रों को भाग लेने का अवसर दिया जाय तथा विद्यालय के कार्यक्रमों में समुदाय के व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाय। इससे सहभागिता के अवसरों का विकास सम्भव होता है।

(9) शिक्षण सूत्र एवं सिद्धान्तों में सामान्यीकरण (Normalization in Teaching Maxims and principles)

समावेशित अधिगम शिक्षण सूत्र एवं शिक्षण सिद्धान्तों को व्यापक रूप से प्रयोग होता है इसलिये एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षण सूत्र एवं शिक्षण सिद्धान्तों का प्रयोग

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS NOTES

22

करते समय समावेशी बालकों का ध्यान रखें। इससे एक ओर शिक्षण सिद्धान्त एवं शिक्षण सूत्रों के लाभ शिक्षक एवं छात्र दोनों को ही प्राप्त होंगे वही दूसरी ओर समावेशित अधिगम की सफलता एवं प्रभावशीलता में वृद्धि होगी। समावेशित अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण सूत्र एवं शिक्षण सिद्धान्तों का प्रबन्धन करते समय निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिये।

(i) समावेशित अधिगम के प्रबन्धन में सामान्य से विशिष्ट की ओर तथा सरल से कठिन की ओर शिक्षण सूत्रों का प्रयोग छात्रों की आवश्यकता एवं रुचि के अनुसार समाकलित अधिगम के उद्देश्यों को सरलता से प्राप्त किया जा सके।

(ii) समावेशित अधिगम की प्रक्रिया को पूर्णतः बालकेन्द्रित बनाने का प्रयास किया जाना चाहिये, जिससे कि सभी छात्रों की उसमें रुचि विकसित हो तथा शिक्षण सिद्धान्तों का प्रयोग व्यापक रूप से हो।

(iii) विशिष्ट विषयों के चयन का क्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर होना चाहिये। जैसे- प्रथम अवस्था में छात्रों से सामान्य चर्चा करनी चाहिये। इसके बाद उसको विशेष नियमों एवं सिद्धान्तों के बारे में बताना चाहिये।

❖ Humility is the key to quick success.

April Th 1 Fr 2 Sa 3 Su 4 Mo 5 Tu 6 We 7 Th 8 Fr 9 Sa 10 Su 11 Mo 12 Tu 13 We 14 Th 15 Fr 16 Sa 17 Su 18 Mo 19 Tu 20 We 21 Th 22 Fr 23 Sa 24 Su 25 Mo 26 Tu 27 We 28 Th 29 Fr 30 Sa •

Scanned with CamScanner

(iv) समावेशित अधिगम प्रक्रिया में रुचि एवं क्रियाशीलता के सिद्धान्त का भी अनुसरण करना चाहिये क्योंकि रुचि के अभाव में कोई भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्पन्न नहीं हो सकती।

(v) समावेशित अधिगम के प्रबन्धन में यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि शिक्षण सूत्रों का प्रयोग एवं शिक्षण सिद्धान्तों का उपयोग प्राथमिक स्तर पर मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर ही करना चाहिये।

(vi) शिक्षण सिद्धान्तों एवं सूत्रों का प्रयोग पाठ्यक्रम विश्लेषण एवं विषयों के चुनाव में व्यापक रूप से करना चाहिये जिससे की विशिष्ट छात्रों में रुचि एवं स्तर के अनुसार ही समाकलन की प्रक्रिया सम्पन्न हो सके।

(10) मूल्यांकन प्रक्रिया में सामान्यीकरण (Normalization in Evaluation Process)

मूल्यांकन प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न सोपानों का अनुकरण करना पड़ता है। समावेशित अधिगम प्रक्रिया का मूल्यांकन भी विशिष्ट रूप में होना चाहिये। यदि कोई शिक्षक मूल्यांकन प्रक्रिया का अनुसरण विशिष्ट रूप में नहीं करता तो वह विशिष्ट छात्रों के स्तर का सही ज्ञान नहीं कर पाता है।

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS NOTES

24

और न ही समावेशित अधिगम को प्रभावी बनाने के लिये सुझाव प्रस्तुत कर सकता है। इसलिये मूल्यांकन के प्रबधन की प्रक्रिया को सम्पन्न करते समय शिक्षक को निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिये।

(i) मूल्यांकन प्रक्रिया में सदैव छात्रों के स्तर का ध्यान रखना चाहिये। जैसे - प्राथमिक स्तर पर छात्रों के लिये किसी विशेष परीक्षा का आयोजन न करते हुए स्वाभाविक रूप से अधिगम का मूल्यांकन करने का प्रयास करना चाहिये जिससे छात्रों का मूल्यांकन भी हो जाय तथा उनके मन में परीक्षा एवं मूल्यांकन के प्रति किसी भी प्रकार का सन्देह उत्पन्न न हो।

(ii) मूल्यांकन प्रक्रिया में छात्रों के प्रत्येक पक्ष का मूल्यांकन करना चाहिये। किसी एक पक्ष के मूल्यांकन से समावेशित अधिगम प्रक्रिया का मूल्यांकन करना संभव नहीं होता। इसलिये छात्र का मूल्यांकन सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक रूप से होना चाहिये।

(iii) मूल्यांकन प्रक्रिया सतत एवं व्यापक रूप से सम्पन्न होनी चाहिये। अर्थात प्रत्येक गतिविधि के बाद प्रश्न पूछकर या चर्चा करके छात्रों के अधिगम स्तर को ज्ञात कर लेना चाहिए।

❖ Idleness is only the refuge of the weak mind.

Scanned with CamScanner

(iv) मूल्यांकन विधियों एवं प्रविधियों का निर्धारण करते समय यह ध्यान देना चाहिये कि विद्यालय में इन विधियों से संबंधित संसाधन उपलब्ध है या नहीं। इससे मूल्यांकन प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न नहीं होती।

(v) मूल्यांकन प्रक्रिया उत्तीर्ण एवं अनुत्तीर्ण शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिये वरन् निम्न अधिगम स्तर के छात्रों को विभिन्न प्रयासों के माध्यम से उच्च स्तरीय अधिगम वाले छात्रों के रूप में परिवर्तित करने का प्रयास करना चाहिये।

Scanned with CamScanner